B.A. Part III
Hindi Hons
सगुण भक्ति काव्य

(1)

19/1/22

डॉ० अरविन्द कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
एस०एन०सिन्हा कॉलेज,
जहानाबाद

प्रश्न:- सूरदास के वात्सल्य वर्णन पर प्रकाश डालें।

उत्तर - महाकवि सूरदास की लेखनी का अधिकार शृंगार के साथ-साथ वात्सल्य पर भी समान रूप से है। बाल मनोविज्ञान का ऐसा आनन्ददायक और मनोमुग्धकारी वर्णन सूर ने अपनी बंद आँखों से किया है उतना आँख वाले भी न कर सके हैं। सूर-साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान आचार्य राम चन्द्र शुक्ल ने तो इनके वात्सल्य वर्णन पर रीझ कर यहाँ तक लिख दिया है कि - "जितने विस्तृत और विशद रूप में बाल जीवन का चित्रण इन्होंने किया है, उतने विस्तृत रूप में और किसी कवि ने नहीं किया।"

रूप चित्रण के दो भाग होते हैं - स्थिर और गत्यात्मक। जहाँ कृष्ण के मुखड़े, आँखें, लट तथा टोपी इत्यादि का वर्णन है वहाँ रूप का स्थिर चित्रण है पर जहाँ कृष्ण के चलते, खेलते, दौड़ते इत्यादि अवस्था का चित्रण है वहाँ रूप का गत्यात्मक चित्रण है। 'देखौ री सुन्दरता के सागर' पद में स्थिर रूप चित्रण को देखा जा सकता है तथा 'जसोदा हरि पालने झुलावै', 'सिखवत चलत जसोदा मैया' आदि पदों में गत्यात्मक चित्रण के उदाहरण को देखा जा सकता है।

सूर ने रूप चित्रण को ही केवल अपनी लेखनी का आधार नहीं बनाया बल्कि बालकों के अन्तः उदर में प्रवेश कर उनकी प्रत्येक प्रवृत्तियों का भी सूक्ष्मता से आकलन किया। बालकों में हठ की प्रवृत्ति होती है। सूर के कृष्ण भी हठी है। वे तो चाँद के लिए मचलते हैं तो फिर मानने का नाम नहीं लेते। यशोदा मनाती है पर वे साफ शब्दों में कह देते हैं ——